

काङ्, काङ्ति *Drātur*. 17, 16; auch काङ्ते; चकाङ्; 1) *begehren, verlangen, zu erlangen streben, sich sehnen nach, erwarten, warten auf* (acc.); act.: यो न कृष्यति न ददति न शोचति न काङ्ति *Bhag.* 12, 17. 18, 54. काङ्गतिमनुत्तमम् *M.* 2, 242. 3, 158. यच्चान्यदिह काङ्गति *MBh.* 3, 10578. अर्थान्काङ्गु कोनाशादिसस्तेन्यं करोति यः 13, 1516. आगमं तस्य काङ्गामः *R.* 4, 47, 18. *Suṣr.* 4, 242, 16. यत्काङ्गति तपोभिरन्यमुनयः *Çāk.* 171. *Çāntiç.* 2, 12. तां रत्नभूतां लोकस्य प्रार्थयतो महीक्षितः । काङ्गति स्म विशेषेण *MBh.* 3, 2126. *R.* 1, 27, 6. *Megh.* 76. अर्थार्थेषु लिङ्गानि काङ्गति *Âçv. Çr.* 3, 4. *Çākh. Çr.* 9, 20, 20. med.: अर्थार्थैर्तत्पर्युक्तं काङ्गते *Âçv. Çr.* 3, 7. नाहं वतो वरं काङ्गि *MBh.* 13, 769. काङ्गवहे दारपतेस्तवाज्ञाम् (*wir warten auf deinen Befehl*) 3, 10623. न काङ्गि विनायं कृत्त न च राज्यं मुखानि च *Bhag.* 1, 32. *MBh.* 2, 1937. पुनर्पुद्गमकाङ्गति *R.* 5, 38, 43. न चापि दारान्मनसाप्यकाङ्गति *MBh.* 1, 1663. काङ्गमापौ जयम् 6020, 4942. *Draup.* 4, 24. *Bhāg.* P. 6, 14, 25. — काङ्गति *begehrt, wonach oder nach dem man verlangt*: गमनं वनवासाय काङ्गतिं हि सह वया *R.* 2, 29, 14. सो ऽयमासादितो दिष्ट्या धातृका काङ्गतिश्चिरम् (*auf den wir lange gelauert haben*) *MBh.* 3, 414. मनसा काङ्गतिं तस्य ममाप्यागमनं स्वयम् *R.* 3, 18, 13. स चास्यै भगवान्प्रादान्मनसः काङ्गतिं भुवि (वरम्) *MBh.* 1, 2410. काङ्गितो ह्यसि मे ऽतिविः 3, 16704. 12611. अतोव त्रपसंयन्त्रां सिद्धानामपि काङ्गिताम् 1, 2400. *Viçv.* 3, 14. *Ragb.* 12, 58. प्रियकाङ्गिता *nach der der Geliebte sich sehnt* *Megh.* 83, 23. n. *Verlangen, Begehren*: सीतादर्शनकाङ्गति *der das Verlangen hat die Sita zu sehen* *R.* 5, 29, 9. — *warten, ohne obj.*: संतानार्थो ऽर्थार्चनं काङ्गति *Çākh. Çr.* 1, 4, 25. 6, 9, 10. — 2) *auf Etwas (dat.) bedacht sein*: मयाचिता देवगणाः — अभिप्रयातस्य वनं चिराय ते क्तिताय काङ्गति दिशश्च *R.* 2, 23, 43 (*इतः प्रयातस्य वनं चिराय ते क्तितायः सन्तु* *Gorr.* 41). — *caus.* काङ्गयति, अचकाङ्गत् *P.* 7, 4, 1. *Vārt.* 1. Sch. in der Calc. *Ausg.* — काङ्ग *ist ein unregelmässiges desider. von कम्.*

— अनु *begehren, verlangen, nach Etwas streben*: अतः प्रियं चेदनुकाङ्गसे त्वं सर्वेषु कार्येषु क्तिताय क्तिषु *MBh.* 2, 2135. 13, 3601. — *Vgl.* अनुकाङ्गिन्.

— अभि *dass., act.*: अत्यर्थमभिकाङ्गमि मृगयां सरयूवने *R.* 2, 49, 15. *Viçv.* 8, 23. *MBh.* 3, 16997. 13, 783. med.: यदभिकाङ्गसे 376. दर्शनां ते ऽभिकाङ्गते *R.* 2, 13, 23. दारान्मन्यकाङ्गति *MBh.* 1, 1662. *R.* 3, 33, 53. दातारमभिकाङ्गते *er wartet auf* 1, 73, 10. अभिकाङ्गति *erseht* *MBh.* 3, 16704. *R.* 1, 8, 27. — *caus.* *dass.* was das simpl.: न चान्यमभिकाङ्गये *MBh.* 3, 12437 (*vgl.* 12466). — *Vgl.* अभिकाङ्गा *f.*

— आ 1) *begehren, nach Etwas verlangen, — streben, erwarten*; mit dem acc.: प्रवृत्तु वृत्तिमाकाङ्गन् *M.* 10, 121. समागमनमाकाङ्गत् *MBh.* 1, 1268. रामाभिषेकमाकाङ्गन्वाकाङ्गदुदयं रवेः *R.* 2, 3, 19. वैदेह्याः प्रियमाकाङ्गन् 94, 1. आ मृत्योः अग्रिमाकाङ्गत् *Jān.* 1, 153. पानीयमाकाङ्गति *Megh.* 134, 6. *Megh.* 88. अपुद्गमाकाङ्गति कौरवाणां सामैव दुर्योधनमाह्वयधम् *MBh.* 5, 39. आकाङ्गते च दक्षित्रान्मयि नित्यं पितामहाः 1, 6186. प्रत्याश्रयतं रिपुनाचकाङ्ग *er wünschte, dass sich der Feind erholte oder er wartete, bis* *Ragb.* 7, 41. गुरुरनुज्ञां धीरेव कन्या पितुराचकाङ्ग 5, 38. भन्तमाकाङ्गते (*Sā.*: = भन्तप्रतीतां विधत्ते) *Ait. Br.* 1, 22. अर्थार्थसंप्रैषं सर्वत्राकाङ्गितुब्रह्मणायाम् *er warte ab* *Lāṭ.* 1, 2, 18. 6, 10. यात्रार्थी कालनाकाङ्गन् चरेद्दत्तं समाहितः *MBh.* 14, 1279. मुनेरुत्तरमाचकाङ्ग *R.* 3, 18, 48. *verlangen nach*, mit dem gen.: अमृतस्येव चाकाङ्गिद्वयमानस्य सर्वदा (ब्राह्मणाः) *M.* 2,

II. Theil.

162. — 2) *mit dem Körper wohin streben, sich hinwenden nach*; mit dem acc.: दक्षिणा दिशमाकाङ्ग्याचेतेमान्वरान्पितृन् *M.* 3, 258. — 3) *gramm. zur Ergänzung erfordern*: नैतदपरमाकाङ्गति *Sch.* zu *P.* 1, 2, 96. med. *Sch.* zu *P.* 3, 4, 23. — *Vgl.* आकाङ्ग *f.*

— अभ्या *s.* अभ्याकाङ्गित, wofür viell. अत्याकाङ्गित zu lesen ist.

— प्रत्या *erwarten, lauern auf*: इद्वैव फलमासीनः प्रत्याकाङ्गित सर्वशः *MBh.* 12, 4870. मृगं हरिर्निवादश्यः प्रत्याकाङ्गित कोचकम् 4, 734.

— समा *begehren, verlangen*: गतो गतेनेव मया दुरात्मा योद्धुं समाकाङ्गति *MBh.* 4, 1664.

— प्र *dass.*: अन्नपानं प्रकाङ्गति *Suṣr.* 1, 352, 6.

— प्रति *verlangen nach, sich sehnen nach*: ज्ञातयश्चापि — तामेव प्रतिकाङ्गते पर्जन्यमिव कर्षकाः *R.* 2, 112, 12.

— वि *beabsichtigen, es auf Etwas abgesehen haben*: सर्वासुराणां निधनं विकाङ्गन् *Hariv.* 13136.

काङ्ग (von काङ्) *f.* das Verlangen *H.* 430. in comp. mit dem obj.: भुक्तकाङ्गा *Suṣr.* 1, 243, 13. नलदर्शनकाङ्ग्या *N.* 16, 1. 14. 24, 2. *R.* 1, 1, 38. 3, 33, 57. *Pañkāt.* 213, 15.

काङ्गिता (von काङ्गिन्) *f.* *dass.*: न मे राज्यस्य काङ्गिता *R.* 2, 34, 28.

काङ्गिन् (von काङ्) *adj.* *verlangend nach*, mit dem acc.: काङ्गिणी पुत्रमुत्तमम् *R.* 2, 110, 20. in comp. mit dem obj.: दर्शनं *Bhag.* 11, 52. *Sund.* 2, 1. *MBh.* in *Benf. Chr.* 30, 4. *R.* 3, 19, 26. 28, 28. 4, 49, 23. *Pañkāt.* 91, 7. स्त्री *MBh.* 3, 432. 11510. 13, 2655. 6397. *Çāntiç.* 4, 11. *Rāga-Tar.* 3, 215. *erwartend*: तदाश्चसिद्धिं भद्रं ते भव त्वं कालकाङ्गिणी *R.* 5, 33, 27. *Pañkāt.* III, 134.

काङ्गारु *m.* *Reiher* *Çatādh.* bei *Wils.*; in der 2ten *Ausg.* काङ्गारु, aber in der alphabet. Ordnung nach काङ्गित.

काङ्गा *f.* *N.* einer Pflanze (*s.* वका) *Çabdaç.* im *ÇKDr.*

काङ्गुक *n.* eine Getraideart *Suṣr.* 1, 193, 15. — *Vgl.* कङ्गु.

काच 1) *m.* a) *Glas* *AK.* 2, 9, 100. 3, 4, 5, 29. *Triç.* 3, 3, 334. II. 1062. an. 2, 56. *Med.* 1. 2. *Suṣr.* 1, 28, 5. काचस्फटिकापात्रेषु 240, 16. 2, 317, 17. *Pañkāt.* I, 87. *Hit. Pr.* 41. *Kathās.* 24, 178. 184. 193. न काचस्य कृते ज्ञातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः 22, 216. काचमूल्येन विक्रीतो रुत चित्तामणिर्मया *Çāntiç.* 1, 12. pl. *Glasperlen*: काचानावयति *Çat. Br.* 13, 2, 6. 8. काचव्यूषी *Glasflasche*, काचघटी *Glaskrug* *Wils.* काचभाजन *Glasgefäß* *Triç.* 2, 9, 9. *Hār.* 127. काचवक्यत्त *Glasretorte* *Wils.* Nach *H. an. und Med.* ist काच auch = माणि *Berykrystall.* — b) eine Klasse von Augenkrankheiten *AK.* 3, 4, 5, 29. *H. an. Med.* vorzugsweise *Affektionen der Linse* *Suṣr.* 2, 86, 2. 277, 4. 321, 1. die besondern Arten *s.* 303, 4. *f.*gg. काचापक् 341, 16. 342, 1. — c) der an den beiden Seiten eines Jochs herabhängende Strick mit einem Netz, in dem die Last liegt; der Strick einer Wagschale *AK.* 2, 10, 30. 3, 4, 5, 29. *H.* 364. *H. an. Med.* — 2) *n.* a) schwarzes Salz; *vgl.* काचमल, काचलवण, काचसेभव, काचसौवर्चल, काचोत्थ, काचोदव. — b) *Wachs* *Rāga.* im *ÇKDr.*

काचक्र *m.* 1) *Glas.* — 2) *Stein* *Wils.*

काचन *n.* eine Schnur, ein Umschlag, welche die losen Blätter einer Handschrift zusammenhalten; काचनक *n.* *dass.* *Hār.* 54. — *Vgl.* काचेल.

काचनकिन् (von काचन) *m.* Handschrift *Çatādh.* im *ÇKDr.*

13*

